अमेरिकी विद्यार्थी ने चुना भारतीय विश्वविद्यालय

एरिका ली नेल्सन

संवाददाता जैन

अमेरिका और भारत छात्रों, शिक्षकों, शोध और संसाधनों के आदान-प्रदान के रास्ते पर नए रचनात्मक तरीकों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। एक और पहल में यह अमेरिकी छात्रा अपनी ग्रेजुएट पढ़ाई वाशिंगटन, डी.सी. में शुरू कर रही है लेकिन अपनी डिग्री नई दिल्ली में पूरी करेगी।

मैं पहली बार वर्ष 2002 में भारत आई। तब मैं 20 वर्ष की कॉलेज छात्रा थी जो संपादकीय इंटर्नशिप के लिए पहली बार अमेरिका से कोच्चि, केरल आई थी। यहां आने का कोई बहुत रोमांटिक कारण नहीं था। मुझे सबसे बड़ी प्रेरणा स्वयं भारत के अंग्रेजी मीडिया से मिली। एशिया में भारत उन कुछ जगहों में से एक था जहां मैं स्थानीय भाषा सीखे बिना पत्रकार के रूप में काम कर सकती थी।

मेरा संस्थान एवरग्रीन स्टेट कॉलेज वाशिंगटन राज्य में स्थित था। इंटर्नशिप के बारे में उसकी बड़ी उदार नीति थी। मुझे चौथाई वर्ष के बराबर शैक्षिक क्रेडिट मिल गया और मैं चार माह बाद उत्तरी कैलिफोर्निया में अपने घर पहुंच गई। लेकिन, भारत के बारे में प्राय: हम पश्चिमी लोगों के मन में बहुत उत्सुकता रहती है। पत्रकारिता में अपनी अंडरग्रेजुएट डिग्री पूरी करने के बाद मैं पत्रकार के रूप में काम करने के लिए नई दिल्ली आ गई। मैंने एक भारतीय व्यक्ति से शादी कर ली और निजी तौर पर हिंदी सीखने लगी। इस तरह कक्षा में जाए बिना ही मैं दक्षिण एशिया की सभी चीजों की गैर आधिकारिक विद्यार्थी बन गई।

लेकिन, जल्दी ही यह सब कुछ बदलेगा। और, इसमें से काफी-कुछ के लिए मैं स्पैन की आभारी हूं।

मैं और मेरे पति वर्ष 2007 में वाशिंगटन में बस गए। वह स्पैन के एक लेख के लिए रिसर्च कर रहे थे। मैं उसी सिलसिले में राजदूत कार्ल इंडरफुर्थ से मिली। वह दक्षिण एशियाई मामलों के पूर्व सहायक सेक्रेटरी थे और अब द जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में अंतरराष्ट्रीय मामलों के ग्रेजुएट कार्यक्रम के प्रभारी हैं। उन्होंने मुझे बताया कि यूनिवर्सिटी ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के साथ सहयोग के समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं जिसके तहत विद्यार्थियों और शिक्षकों का आदान-प्रदान भी होगा।

इंडरफुर्थ ने मुझे यह भी बताया कि भारत से तो कुछ शिक्षक पढ़ाने के लिए वाशिंगटन आ चुके हैं लेकिन इलियट स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स का कोई भी विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठा कर अब तक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नहीं गया है। उसी समय मुझे लग गया कि वह पहला विद्यार्थी मुझे ही बनना है।

जैसा कि प्राय: भारत में होता है, अमेरिका में अंडरग्रेजुएट अध्ययन पूरा करने के बाद स्वत: ही ग्रेजुएट स्कूल में दाखिला नहीं हो सकता। इसमें काफी खर्चा करना पड़ता है (साधारणत: 10,000 डॉलर से 30,000 डॉलर प्रति वर्ष से भी अधिक ट्यूशन फ़ीस) और यह एक बड़ा निर्णय होता है। मैं ग्रेजुएट स्कूल में दाखिले के बारे में गंभीरता से सोच रही थी। यहां तक कि भारत में रहते समय ही मैंने अपना ग्रेजुएट रिकार्ड एक्जामिनेशन यानी जीआरई दे दिया था। लेकिन यह पता नहीं था कि मुझे कहां और कब जाना है।

कभी-कभी सौभाग्य साथ दे देता है। जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के अंतरराष्ट्रीय मामलों के कार्यक्रम को सम्मान से देखा जाता है और अमेरिका की राजधानी में पढ़ाया जाता है। इसका अध्ययन भारत के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के साथ जुड़ा है। यह इतना अच्छा है कि इसे छोड़ना ठीक नहीं।

मैंने किशोरावस्था से ही पत्रकार के रूप में काम किया था। अब मुझे किसी क्षेत्र में आगे बढ़ना था। कुछ नया करना था। मैंने सोचा मुझे ऐसी नौकरी करनी है जिससे मैं दोनों देशों को करीब ला सकूं।

जिस तरह अमेरिका में जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएट डिग्री मेरे रेज्यूमे को महत्वपूर्ण बनाती थी, वैसे ही जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय मेरे अध्ययन को वैश्विक रूप देगा और मैं तर्कसंगत रूप से ऐसी अमेरिकी ग्रेजुएट बन जाऊंगी जिसे दक्षिण एशिया की गहरी समझ होगी। मैं इसके संसाधनों और शिक्षकों की मदद से एक शोध परियोजना पर भी काम करना चाहती हूं।

मैंने जब केवल एक ही ग्रेजुएट स्कूल के लिए आवेदन किया तो लोगों ने मुझे सनकी समझा। लेकिन, मैं जानती थी कि मुझे जो कुछ भी चाहिए, वह वाशिंगटन यूनिवर्सिटी में है। और, इससे कुछ भी कम मैं नहीं चाहती। मेरा दांव ठीक पड़ा: मुझे दाखिला मिल गया और मैंने अपनी डिग्री के लिए 2 सितंबर से अंतरराष्ट्रीय मामलों की कक्षा में पढ़ाई शुरू कर दी।

विदेश में पढ़ाई की योजना बनाना कठिन काम है। जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी का अंतरराष्ट्रीय आदान-प्रदान कार्यक्रम भी अन्य कार्यक्रमों की ही तरह चलता है: जिस विदेशी विश्वविद्यालय के साथ इसकी भागीदारी है, यह उससे 10 शैक्षिक क्रेडिट तक स्वीकार करता है। (ग्रेजुएट डिग्री अर्जित करने के लिए 40 क्रेडिट आवश्यक होते हैं।) इसलिए मुझे अपनी पढ़ाई इस तरह करनी है कि मैं भारत जाने से पहले ग्रेजुएट स्कूल के अंतिम सेमेस्टर में अपने सभी मूल पाठ्यक्रम पूरे कर लूं।

आगामी वर्ष में मुझे शोध प्रबंध का विषय चुनना होगा, विदेश में अध्ययन की छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करना होगा और अपने लिए जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की कक्षाएं चुननी होंगी, विश्वविद्यालय में विदेशी विद्यार्थी के रूप में आधिकारिक स्वीकृति के लिए आवेदन करना होगा और नई दिल्ली में अपने लिए आवास की भी व्यवस्था करनी होगी।

यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो मैं वर्ष 2010 में भारत आऊंगी और इस बार आत्मविश्वास से भरपूर 29 वर्षीय ग्रेजुएट विद्यार्थी के रूप में फिर उस देश में आऊंगी जहां हमारा परिवार और मित्र हैं। मैं केवल अंग्रेजी पर ही निर्भर नहीं करूंगी बल्कि अपनी हिंदी को बेहतर करूंगी। मेरे वहां आने के अब कई कारण हैं और वे रोमांटिक भी हैं। मैं भारत से प्यार करती हूं और वापस लौटने का इंतजार नहीं कर पा रही हूं।

__एरिका ली नेल्सन__ स्वतंत्र लेखिका और जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन डी.सी. में ग्रेजुएट विद्यार्थी हैं।